ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-7* August- 2021
Innovation The Research Concept

प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण छात्राओं के बीच हिन्दी तथा गणित विषय में प्राप्त शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

Comparative Study Between Rural and Urban Female Students Studying In Primary Schools In Respect To Their Academic Achievement In Hindi and Mathematics Subjects

Paper Submission: 15/08/2021, Date of Acceptance: 25/08/2021, Date of Publication: 26/08/2021

निकेश चन्द
सहायक अध्यापक,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
जू. हा. स्कूल, अशिकपुरा,
अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

वर्तमान अध्ययन में शहरी तथा ग्रामीण छात्राओं के बीच हिन्दी तथा गणित विषय में प्राप्त शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन के लिए 96 शहरी तथा 64 ग्रामीण बालिकाओं की संख्या ली गई। प्रदत्त संकलन समान संजोग पद्धति द्वारा किया गया। प्राप्तांकों का विश्लेषण टी-परीक्षण द्वारा करने पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि गणित विषय में शहरी बालिका उच्च अंक प्राप्त करती है तथा हिन्दी विषय में शहरी बालिका की तुलना में ग्रामीण बालिका ने उच्च अंक प्राप्त किए है।

In the present study, 96 urban and 64 rural girls were taken to study the academic achievement achieved in Hindi and Mathematics among urban and rural girls. The provided compilation was done by the same methodology. After analyzing the scores through t-test, it was concluded that urban girl scored higher marks in Mathematics subject and rural girl scored higher marks than urban girl in Hindi subject.

मुख्य शब्दः शैक्षिक उपलब्धि, प्राथमिक विद्यालयों, शहरी तथा ग्रामीण
Academic Achievement, Primary School, Rural & Urban

प्रस्तावना

शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य सामान्य रूप से परीक्षा में प्राप्त अंकों से है। सामान्य रूप से यह देखा गया है कि एक ही कक्षा में पढ़ने वाले सभी विद्यार्थी पाठ्यक्रम, शिक्षक, कक्षा, पुस्तकें, शिक्षण समय इत्यादि सब कुछ सामान्य रहते हुए भी परीक्षाओं में समान अंक प्राप्त नहीं करते। विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों द्वारा किए गए अध्ययनों से यह पता चलता है कि शैक्षिक उपलब्धि में इस भिन्नता के सामाजिक, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक कई कारण होते हैं। सामाजिक कारणों में विद्यार्थियों की सामाजिक स्थिति यौन भिन्नता, पारिवारिक वातावरण, परिवार में शिक्षा का स्तर इत्यादि कई ऐसे कारक होते हैं जो उसमें शैक्षिक उपलब्धि को निर्धारित करते हैं। इस सन्दर्भ में विद्यार्थियों के निवास स्थान (शहरी अथवा ग्रामीण) के प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

कई पूर्ववर्ती अध्ययनों द्वारा यह स्पष्ट होता है कि कई विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके निवास स्थान का सार्थक प्रभाव होता है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण छात्राओं के बीच हिन्दी तथा गणित विषय में प्राप्त शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

अध्ययन विधि

वर्तमान अध्ययन में 96 शहरी तथा 64 ग्रामीण बालिकाओं का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया। शैक्षिक उपलब्धि के लिए पिछली कक्षा में प्राप्त गणित तथा हिन्दी विषय में प्राप्त प्राप्तांकों को लिया गया। प्रतिदर्श की इकाइयों का चयन प्राथमिक विद्यालयों में पांचवीं

कक्षा में पढ़ने वाली छात्राओं में से सरल संजोग पद्धति द्वारा किया गया।

साहित्यावलोकन

कोहली (1975) ने अपने शोध में यह निष्कर्ष निकाला कि ग्रामीण विद्यार्थियों ने भावनात्मक, स्वास्थ्य तथा विद्यालयी समायोजन क्षेत्र में, उच्च अंक प्राप्त किए समायोजन, प्रशंसा का स्तर तथा उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध पाया गया। ग्रामीण विद्यार्थी विद्यालयी समायोजन, स्वास्थ्य तथा भावनात्मक क्षेत्रों में कठिनाई अनुभव करते हैं।

उपाध्याय व विक्रांत (2004) के अनुसार छात्रों में छात्राओं की अपेक्षा अधिक भावनात्मक स्थायित्व तथा साथ ही छात्र-छात्राओं के मध्य शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक अंतर था। जेनिफर एम0 (2005) ने अपने अध्ययन में पाया कि बालक और बालिकाओं की सम्पूर्ण शैक्षिक उपलब्धि व अंग्रेजी व सामाजिक अध्ययन की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं था। गणित को छोड़कर उन सभी विषयों में बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि उच्च थी।

पाल तथा खान (2005) के परिणामों के अनुसार ग्रामीण छात्रों में ही हीनभावना तथा भावनात्मक स्थायित्व अधिक पाया गया। कौर एवं बाला (1995) के अनुसार बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में गणित को छोड़कर सभी विषयों में शैक्षिक उपलब्धि उच्च थी।

उपर्युक्त अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि शैक्षिक उपलब्धि का स्तर ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों में सार्थक रूप से भिन्न होता है। यद्यपि कि इस क्षेत्र में बहुत सारे पूर्ववर्ती अध्ययन किए गए हैं, फिर भी उन अध्ययन परिणामों को भारतीय जनसंख्या पर सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता क्योंकि यह अध्ययन पाश्चात्य प्रतिदर्श पर किए गए हैं। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान अध्ययन की परिकल्पना की गयी।

परिणाम एवं विश्लेषण

प्राप्त परिणामों को विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए सारणी संख्या I और II में दर्शाया गया है-

प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं की गणित विषय में उपलब्धि

प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालयों में संचालित योजनाओं का ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं एवं शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की गणित विषय में उपलब्धि में प्रभाव

सारणी–I

घटक	मध्यमान	संख्या	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात का मान	स्वातंत्र्य संख्या	सार्थकता स्तर
ग्रामीण बालिका	32.36	64	10.43	2.273	158	.05
शहरी बालिका	35.86	96	8.02			

व्याख्या

सारिणी संख्या-I के अनुसार प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 64 ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की गणित विषय में उपलब्धि का मध्यमान 32.36 है तथा 96 शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की गणित विषय में उपलब्धि का मध्यमान 35.86 है। प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम में संचालित योजनाओं के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र तथा शहरी क्षेत्र की बालिकाओं के गणित विषय में उपलब्धि अंकों के मानक विचलन क्रमशः 10.43 व 8.02 पाया गया तथा गणना में ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं के गणित विषय के अंकों से क्रान्तिक अनुपात का मान 2.273 प्राप्त हुआ। यह मान इस बात को सिद्ध करता है कि दोनों समूह के गणित विषय के उपलब्धि प्राप्तांकों में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया है क्योंकि सार्थक प्रभाव स्पष्ट करने के लिए 158 स्वातंत्र्य संख्या के अनुसार क्रान्तिक अनुपात का मान 0.01 व 0.05 स्तर पर मान क्रमशः 2.61 व 1.98 होना आवश्यक है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 2.273 इस आवश्यक मान 1.98 के 0.05 स्तर के मूल्य से अधिक है इसलिए यह स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालय में संचालित योजनाओं का ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की गणित विषय की उपलब्धि में सार्थकता पायी गयी अर्थात् योजनाओं का सकारात्मक प्रभाव पाया गया।

अतः प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालयों में संचालित योजनाओं का शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की गणित विषय में उपलब्धि की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की गणित विषय में उपलब्धि कम पायी गयी।

प्राथमिक विद्यालय के बालिकाओं की हिन्दी विषय में

उपलब्धि

प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालयों में संचालित योजनाओं का ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की हिन्दी विषय में उपलब्धि में प्रभाव

सारणी–II

घटक	मध्यमान	संख्या	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात का मान	स्वातंत्र्य संख्या	सार्थकता स्तर
ग्रामीण बालिका	31.24	64	6.93	4.365	158	.01
शहरी बालिका	27.24	96	4.66			

व्याख्या

सारिणी संख्या I के अनुसार प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 64 ग्रामीण बालिकाओं की हिन्दी विषय में उपलब्धि का मध्यमान 31.24 है तथा 96 शहरी बालिकाओं की हिन्दी विषय में उपलब्धि का मध्यमान 27.24 है। प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम में संचालित योजनाओं के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र के तथा शहरी क्षेत्र के बालिकाओं के हिन्दी विषय में उपलब्धि अंकों के मानक विचलन क्रमशः 6.93 व 4.66 पाया गया तथा गणना में ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों के बालिकाओं की हिन्दी विषय के अंकों से क्रान्तिक अनुपात का मान 4.365 प्राप्त हुआ। यह इस बात को सिद्ध करता है कि दोनों समूह के हिन्दी विषय के उपलब्धि प्राप्तांकों में 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया है क्योंकि सार्थकता स्पष्ट करने के लिए 158 स्वातंत्र्य संख्या के अनुसार क्रान्तिक अनुपात का मान 0.01 व 0.05 स्तर पर मान क्रमशः 2.61 व 1.96 होना आवश्यक है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 4.365 इस आवश्यक 2.61 के 0.01 स्तर के मान से अधिक है इसलिए यह स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालय में संचालित योजनाओं का ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की हिन्दी विषय की उपलब्धि में सार्थक भिन्नता पायी गयी अर्थात् योजनाओं का सकारात्मक प्रभाव पाया गया।

अतः प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालयों में संचालित योजनाओं का शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की हिन्दी विषय में उपलब्धि की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की हिन्दी विषय में उपलब्धि कम पायी गयी।

निष्कर्ष

1. गणित विषय में ग्रामीण बालिका की तुलना में शहरी बालिका उच्च अंक प्राप्त करती हैं।
2. हिन्दी विषय में शहरी बालिका की तुलना में ग्रामीण बालिका उच्च अंक प्राप्त करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अवनिजा, के0के0 (1995), ए स्टडी ऑफ सर्टेन कोरिलेप्स ऑफ सेल्फ कॉनसेप्ट एमंग स्टूडेन्ट्स ऑफ नवोदय विद्यालय, पीएच0डी0 एजूकेशन मैसूर यूनिवर्सिटी।*
2. *उपाध्याय, एस0के0 एण्ड विक्रान्त (2004), ए स्टडी ऑफ इमोशनल स्टेबिलिटी एण्ड एकेडमिक एचीवमेन्ट ऑफ ब्याज एण्ड गल्स एट सैकेण्डरी लेवेल।*
3. *जेनिफर, एम0 (2005), स्टूडेन्ट्स सैल्फ कन्सेप्ट रिलेटिड टू एवं एल्टसेटिव हाई स्कूल एक्स्पीरिएन्स।*
4. *Kohli, T.K. Characteristics behavioural and environmental correlates of academic achievement of over and under achievers at different levels of intelligence (Unpublished doctoral thesis). Punjab University, Chandigarh, India, 1975.*
5. *Mehta P. The achievement motive in high school boys. New Delhi : NCERT, 1969*